परमेश्वर के मृत्यु-स्वर्गदूत ने दुष्ट राजा पर उसकी प्रजा को स्वतन्त्र करने का दबाव डाला

प्रार्थना: हे प्रभु, ऐसा होने दीजिये कि बच्चे आप पर भरोसा रखें कि आप लोगों को पाप, मृत्यु तथा दुष्टात्माओं के चंगुल से स्वतन्त्रता देने की सामर्थ रखते हैं।

मृत्यु दूत

बड़े या युवा बच्चे इस्राएल के बन्धु आई से छूटने की घटना को उद्घोषक द्वारा तैयार नाटक के सारांश के अनुसार निम्नलिखित विभिन्न भागों का प्रयोग करते हुए, दोहराएं।

इस्राएल के बन्धुआई से छूटने की घटना पर आधारित नाटक के भाग (निर्गमन अध्याय 11-15) :

- आराधना सभा के मुख्य अगुवे के साथ मिलकर बच्चों द्वारा यह नाटक प्रस्तुत करने की योजना बनाएं।
- जब आपके पढ़ाने का समय हो तो बच्चों को इस नाटक का अभ्यास कराईए।
- तैयारी में बड़े बच्चे छोटे बच्चों की सहायता करें।
- नाटक के सभी भाग प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।
- बड़े और युवा बच्चे फिरौन, भयभीत बच्चों, उद्घोषक तथा मूसा की भूमिका निभाएं।
- बहुत छोटे बच्चे को अन्य छोटी भूमिकाएं दीजिए।

प्रथम भाग

उद्घोषक : कहानी के प्रथम भाग का सारांश प्रस्तुत करे:

1) दुष्ट मिस्री परमेश्वर की प्रजा को कोड़े लगाकर दासों की भांति काम करने का दबाव डालते थे
2) परमेश्वर ने अपने लोगों का करहाना सुना और मूसा को दुष्ट फिरौन के पास भेजा कि वह स्वतन्त्रता दे।
3) फिरौन मना कर देता है, तब परमेश्वर विभिन्न विपत्तियां डालकर उस पर स्वतन्त्रता देने का दवाब डालता है।

अन्त में उद्घोषक यह कहे : "मूसा ने राजा फिरौन से इन बातों की मांग रखी "

मूसा: "इस्राएल का महाराजा परमेश्वर तुझे आज्ञा देता है कि तू उसकी प्रजा को स्वतन्त्र कर दे"

फिरौन: "कौन है तेरा परमेश्वर कि मैं उसकी आज्ञा मानूं? मिस्र के देवता उससे अधिक महान हैं"

मूसा: हमारा परमेश्वर विपत्तियॉ भेजकर सिध्द कर सकता है कि वह तेरे देवताओं से अधिक शक्तिशाली है।

उद्घोषक: पहली विपत्ति ने मिस्र की पवित्र नील नदी का जल लहू बना दिया जिसकी वे पूजा करते थे।

फिरौन: हमारे सारे जल के स्रोत अशुद्ध हो गये हैं, लेकिन हमारे लोग नये कुएं खोदकर ताज़ा जल निकाल लेंगे।

कलाकार छोटे बच्चे: मेंढकों की तरह छलांगे लगाएं।

उद्घोषक: दूसरी विपत्ति थी मेंढक, अब सुनें कि फिरौन व अन्यों ने इनके बारे में क्या कहा?

फिरौन: मेंढक सब जगह मेंढक, मेरे शयनकक्ष में भी, हटाओ इनको ---

छोटे कलाकार बच्चे: अपने हाथ पांव व मुंह पर थपकी मारते हुए खटमलों की शिकायत करते हैं।

उद्घोषक: तीसरी विपत्ति पिस्सू। अब सुनें कि लोगों ने इनके बारे में क्या कहा --

फिरौन तथा सभी कलाकार बच्चे: अपने चारों ओर मक्खियॉ मारने का अभिनय करें, व शिकायत करें।

उद्घोषक: चौथी विपत्ति मच्छर। अब देखें इनके लिये लोगों ने क्या किया --

कलाकार बच्चे: गाय की आवाजें करें, घुटनों के बल चलें, भूमि पर लोट लगाएं व कूदें।

उद्घाषक: पांचवीं विपत्ति पशुओं का मरना, देखो गाय कैसी तड़प रही है।

फिरौन व सभी छोटे बच्चे: कुछ अपने हाथों को पकड़ें और कुछ अपने चेहरे को, दर्द में चिल्लाएं।

उद्घोषक: छटी विपत्ति फोड़े फफोले । देखो फिरौन और सब लोगों का कैसा हाल है।

कलाकार बच्चे: ऐसा अभिनय करें जैसे सिर पर ओले गिरने से बचाव कर रहे हों, फिर गिर पड़ें।

उद्घोषक: सातवीं विपत्ति ओलों का पड़ना । देखें जब ओले पड़े तो मूर्तिपूजकों ने क्या किया।

कलाकार: हर स्थान पर मुंह मारें जैसे घास खा रहे हों,

फिरौन: टिडियां रोको, मूसा उन्हें रोको, वह हमारी सारी फसल खा रही हैं।

उद्घोषक: आठवी विपत्ति - टिष्टियां - घास खाने वाली - देखें ये किस तरह सब कुछ खा रही हैं।

कलाकार: ऐसे चलें जैसे अंधे हों। शिकायतें करें कि यह तो बहुत अधिक अंधेरा है।अपने हाथ आगे कि ओर उठायें जैसे रास्ता ढूंढ रहे हों। एक दूसरे पर सब गिर पड़ें।

उद्घोषक : नवीं विपत्ति थी अंधेरा, मिस्री लोग सूर्य की पूजा करते थे, परमेश्वर ने उसे नष्टकर अंधेरा कर दिया। देखो सब लोग कैसे टटोल रहे हैं।

नाटक का भाग दो

उद्घोषक: संक्षिप्त में नाटक की कहानी का सारांश बताए :

1) अंतिम विपत्ति में मृत्यु-स्वर्गदूत पूरे क्षेत्र से होकर उड़ा और हर मिस्री के घर के पहिलौठे मार दिए
2) विश्वासियों के घरों पर मेम्ने के रक्त का चिन्ह देखकर मृत्यु-दूत आगे बढ़ गया।
3) उन्होंनें शीघ्रता से मेम्ने का मांस खाया। यहूदी आज तक हर वर्ष फसह-पर्व मनाते हैं।

भयभीत बच्चा: कोई कविता या गीत जो इस घटना से संबंधित हो, पढ़े या मुखाग्र सुनाए पर स्पष्ट व रोचक भाव में सुनाए।

''बच्चे की भयमित आशा

बच्चा रोता है,'' मैं सो नही सकता
मेरा हृदय भय ले धड़कता है!
मूसा ने कहा, इस रात यह होगा
मृत्यु दूत मिस्रा पर आएगा
और मैं बड़ा पुत्र आएगा
यदि बकरे का लोहू द्वार पर न लगे
रात अंधेरी है, और अंधेरी हो जाएगी।
हवा ठंडी है, और ठंडी हो रही है।

किसी घर में कोई आवाज़ नही।

शायद मृत्यु दूत आया ही नहीं

एक बच्चे की आवाज़ सुनाई देती है

मृत्यु दूत निकट है

सब तरफ रोना है, मिस्रा की आवाज़ से

मैं जीवित हूं, जीवित हूं

मेम्ने के लोहू ने मुझे जीवन दिया।''

नाटक भाग तीन

उद्घोषक: संक्षिप्त में कहानी का सारांश प्रस्तुत करे:

1) फिरौन पहले तो जाने की आज्ञा दे देता है पर बाद में मन बदल लेता है और उनके पीछे सेना भेज देता है।

2) परमेश्वर समुद्र में रास्ता बना देता है कि उसकी प्रजा पार जा सके।

3) जब मिस्री सेना ने इस्राएलियों का पीछा करते हुए समुद्र में कदम रखा तो जल में डूब मरे।

सारांश बताने के बाद उद्घोषक यह कहे: अब सुनें कि फिरौन ने अंतिम विपत्ति के बाद जो पहिलौठों का मरना था, क्या कहा:

फिरौन: मेरा बड़ा पुत्र मर गया था इसलिये मैंने इस्राएली बन्धुओं को जाने की आज्ञा दे दी थी पर अब मैं अपना निर्णय बदलता हूं। हे सिपाहियो अपने घोड़े व रथ तैयार करो और इस्राएलियों का पीछा करो, एक भी बचने न पाए, सबको घात कर दो।

कलाकार बच्चे: ऐसे दौड़ें मानो घोड़ों पर सवार हों, फिर चिल्लाएं और कहें पानी तो वापस आ रहा है, सब गिर पड़ें।

मूसा: पवित्र परमेश्वर की स्तुति हो जिसने अपने सामर्थ्य से हमें मृत्यु और बन्धुआई से बचाया। आमीन।

उद्घोषक: जिन्होंने इस नाटक मे सहायता की उन सबका धन्यवाद।

बच्चे एक मेंढक का चित्र बनाएं। उस चित्र को वे आराधना के समय बड़े बच्चों को दिखाएं व बताएं कि परमेश्वर ने दुष्ट राजा पर मेंढक की विपत्ति भेजकर उस पर दबाव डाला था कि वह बन्धुआई से स्वतन्त्रता दे।

कविता: प्रत्येक बच्चा निर्गमन 15:3-6 याद करे। बड़े बच्चे इस विषय पर कविता बनाएं कि प्रभु यीशु से 1500 वर्ष पूर्व किस अद्भूत रीति से परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाया था।

मुखाग्र याद करें : भजन संहिता 91:1

प्रार्थना: प्रिय परमेश्वर आप सर्व सामर्थी परमेश्वर हैं। आपने संसार के सबसे शक्तिशाली सम्राट शैतान से हमें बचाया है। हमारे मित्रों को भी बचाएं, हम यीशु के सर्वसामर्थी नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

Copyright 2003 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net